ॐ मृत्युंजय महादेव त्राहिमाम् शरणांगतम् । जन्म मृत्युं जरा व्याधि पीडितम् कर्मबन्धनैः ।।

सिंहस्थ कुंभमेळा यही होता है ।

श्रीक्षेत्र त्र्यंबकेश्वर मुल गोदावरी के उपाध्ये

पं. लक्ष्मीकांत रमेशचंद्र नारायण थेटे

बंधुः-पं. रतिष रमेशचंद्र थेटे

चि. महेंद्र लक्ष्मीकांत थेटे

घर नं. 297, 'शिवतीर्थ', कुशावर्त तीर्थ के पास, हंसराज करमसी धर्मशाला के बाजुमें,
श्री सिद्धिविनायक मंदीर के सामने, श्रीक्षेत्र त्र्यंबकेश्वर, तहसील त्र्यंबकेश्वर, जिला नाशिक पिन:- 422 212.

☎:- (02594) 233176 📱:- 9881337745 / 9881066307 / 9422268576

Visit Us At: Kaalsarpadosh.com

* पुजाविधी के बारेमें जानकारी *
(पितृदोष निवारण विधी)

1) नारायण नागबली विधी:-

नारायण नागबली यह 2।। दिन का विधी होता है । इसके लिए विधी मुहूर्त के पहले दिन शाम 6 बजे तक त्र्यंबकेश्वर यहाँ मुकाम के लिए आना जरूरी है । विधी के पहले दिन सुबह कुशावर्त तीर्थ में स्नान करके, गंगापुजन करके आपने साथ लाए हुए नये वस्त्र पहनकर पुजा करनी होती है । यह विधी अपने परिवार में किसी व्यक्ती का अपमृत्यु, अपघाती मृत्यु अथवा संतती न हुए व्यक्ती का, अथवा जाने – अनजाने व्यक्ती का मृत्यु अथवा अपनी कुंडलीनुसार पुर्वजन्मका दोष हो तो (पितृदोष), कोई व्यक्तीयों सद्गती प्राप्त नहीं हुई हो ऐसे व्यक्ती का नाम गोत्र मालूम नहीं होता । इसलिए उस व्यक्ती का नाम नारायण लेकर उसके पिता, दादा, परदादा । इनका नाम ब्रम्हा, विष्णू और महेश ऐसे लेकर उन्हें सद्गती भगवान के माध्यम से मिलने के लिए उनका गोत्र मालुम नहीं, इसलिए उनका गोत्र काश्यप मतलब भगवान के गोत्रों से यह विधी करके उनको मोक्ष गती प्राप्त होती है, और उनका शुभ आशिर्वाद मिलता है । परिवार में इस प्रकार के दोष हो तो घर में बहोत मुसीबतें आती है, उदा. संतती न होना, व्यवसाय, शिक्षा में वृद्धी न होना, विवाह न होना, ऐसे उनके प्रकार होते है। इसलिए यह विधी श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर के अर्थात ब्रम्हा, विष्णू, महेश इनके सानिध्य में गोदावरी के उगमस्थान पर संपन्न होता है । त्र्यंबकेश्वर गौतमी गंगा का उगमस्थान होते हुए ज्योतिर्लिंग का स्थान होने के कारण यह विधी अखंड भारत वर्ष में त्र्यंबकेश्वर में होता है । पिता जीवित ना हो तो मुँडन करना पडता है । विधी की दक्षिणा में 2 व्यक्तियोंकी भोजन व्यवस्था हमारे द्वारा की जाती है।

• त्रिपिंडी श्राद्ध विधी:-

त्रिपिंडी श्राद्ध यह विधी भी काम्य विधी है। इस विधी का उद्देश लगातर तीन साल तक पितरोंका श्राद्ध नही हुआ तो उन्हे प्रेतत्व प्राप्त होता है, वह दूर करने हेतू त्रिपिंडी श्राद्ध यह विधी किया जाता है। अतृप्त पितर परिवार को पिडा देते है, पितृ कर्म का लोप होना, श्राद्ध कर्म का लोप होना, अगर घर के किसी व्यक्ती का अंतीम कर्म ठिक से ना हुआ हो तो अतृप्त पितरोंद्वारा दैनंदिन जीवन मे पिडा उत्पन्न की जाती है। उससे मुश्किलो का सामना करना पडता है। घरमें अशांतता, कलह का निर्माण होता है। उस पिडा के निवारणार्थ त्रिपिंडी श्राद्ध कर्म किया जाता है। घर की कोई मृत व्यक्ती लगातर सपने में आना या घर के बाल, युवा, वृद्ध यह तीन पिढीयों के कोई मृत व्यक्ती को मोक्ष मिलने हेतू ये त्रिपिंडी श्राद्ध करना शास्त्र संमत है । त्रिपिंडी श्राद्ध यह एक दिन का विधी है। कुशावर्त तीर्थ पर यह विधी किया जाता है।

3) कालसर्प योग शांती विधी:-

कालसर्प योग शांती यह विधी 1 दिन का है । इस विधी के लिए मुहूर्त के एक दिन पहले शाम 6 बजे तक त्र्यंबकेश्वर यहाँ मुकाम के लिए आना आवश्यक है । विधी के दिन सुबह कुशावर्त कुंड पर स्नान, दर्शन करके विधी की शुरूवात होती है । अपनी जन्म पत्रिका में कालसर्प दोष हो तो यह विधी किया जाता है । पत्रिका में राहु और केतु इनके बीच शुभग्रह हो तो कालसर्प दोष होता है । इसलिए शुभ ग्रहों के फल नहीं मिलते । उसके लिए कालसर्प दोष निवारणार्थ यह विधी किया जाता है । यह विधी त्र्यंबकेश्वर यहाँ होने का मुख्य कारण यहाँ आद्य ज्योतिर्लिंग महामृत्युंजय का स्थान और गोदावरी का उगमस्थान होने के कारण नवग्रहों की आदिदेवता भगवान त्र्यंबकेश्वर मतलब ईश्वर है । इसलिए यह विधी यहाँ होता है । यह विधी विवाहीत या अविवाहीत व्यक्ती कर सकती है । प्रभू त्र्यंबकेश्वर गंगा गोदावरी के कृपा से आपकी सब मनोकामना पूरी होती है । विधी के लिए मुहूर्त आवश्यक है, उस हिसाब से पहले फोन करके आना चाहिए । विधी संपन्न होने के बाद सीधे अपने घर जाना होता है । इस विधी के लिए आने वाले दो व्यक्तीयों की भोजन व्यवस्था हम विधी के दिन करते है ।

विधी के मुहूर्त तथा विशेष जानकारी इस जानकारी पत्र के पिछले पेजपर देखे।

* पुजा विधी के लिए सन 2023 के मुहूर्त *

महिना	नारायण नागबली	कालसर्प शांती और त्रिपिंडी श्राद्ध
जनवरी	1, 4, 8, 11, 14, 22, 28, 31	3, 7, 10, 13, 21, 25, 27, 30
फरवरी	4, 7, 10, 14, 19, 24, 27	3, 6, 9, 13, 18, 23, 26
मार्च	2, 5, 9, 13, 18, 24, 27, 31	1, 4, 8, 12, 17, 22, 26, 30
अप्रैल	3, 6, 10, 14, 20, 23, 27, 30	2, 5, 9, 13, 18, 22, 26, 29
मई	3, 7, 12, 17, 20, 23, 26, 30	2, 6, 11, 16, 19, 22, 25, 29
जून	3, 8, 14, 17, 21, 24, 27	2, 7, 12, 16, 20, 23, 26, 30,
जुलाई	1, 5, 11, 14, 18, 21, 24, 28	4, 9, 13, 17, 20, 23, 27, 31
अगस्त	2, 7, 10, 15, 18, 21, 24, 29	1, 6, 9, 14, 17, 20, 23, 28
सितंबर	3, 6, 9, 12, 15, 18, 22, 26	1, 5, 8, 11, 14, 17, 21, 25, 30
अक्तुबर	1, 4, 8, 11, 18, 23, 28, 31	3, 7, 10, 14, 16, 21, 27, 30
नवंबर	4, 7, 16, 19, 25, 28	3, 6, 10, 15, 18, 21, 24, 27, 30
दिसंबर	2, 5, 8, 12, 16, 22, 25, 29	1, 4, 7, 11, 15, 20, 24, 28, 31

* विधी के लिए लगनेवाला साहित्य:-

1) नये कोरे वस्त्र (कपडे)
   - पुरुषों के लिए:- धोती, बनियान, अंडरवियर, टॉवेल
   - महिलाओं के लिए:- साडी, ब्लाऊज, पेटीकोट, इ.
   (महिलाओं के वस्त्रोंका रंग काला और सफेद छोडकर दुसरा कोई भी रंग चलेगा।)
2) 1 सुवर्ण नाग प्रतिमा। (यथाशक्ती)
   (सिर्फ नारायण नागबली विधी के लिए।)
3) 1 नारियल, 5 सुपारी
4) 1 ताला-चाबी रुम के लिए।

मुहूर्त के एक दिन पहले शाम 6 बजे तक त्र्यंबकेश्वर मे आना जरुरी है।

* जिस व्यक्ती को नारायण नागबली, त्रिपिंडी श्राद्ध और कालसर्प शांती यह विधी एकसाथ करने हो वह व्यक्ती नारायण नागबली विधी के मुहूर्त देखे।

* जिस व्यक्ती को केवल त्रिपिंडी श्राद्ध या कालसर्प शांती विधी करनी हो, वह व्यक्ती केवल कालसर्प शांती और त्रिपिंडी श्राद्ध विधी के मुहूर्त देखे।

* विशेष जानकारी:-

- इस सभी विधी में 2 व्यक्तीयों की भोजन की व्यवस्था हम करते है। जिनके हाथसे पुजा होगी उन्ही लोगोंकी भोजन व्यवस्था कि जाएगी। जादा लोग होंगे तो उसका चार्ज अलग से देना होगा।
- रहनेकी व्यवस्था लॉज या धर्मशाला में होगी। उसका चार्ज आपको देना होगा।
- देर रात मत आइये। विधी के एक दिन पुर्व 6-00 बजे तक यहाँ आना चाहिये।
- वृद्ध और बिमार लोगों को आने की आवश्यकता नही।
- रात को देर से आनेपर रुम दिखाने की जिम्मेदारी हमारी नही होगी। कृपया जादा से जादा 9-00 बजे तक आनेका प्रयास करे।
- अगर आपके परिवार मे किसी व्यक्ती की मृत्यू हो गई हो तो 6 महिने तक नारायण नागबली विधी कर नही सकते, 6 महिने पुरे होने के बाद या सवंत्सर बदलने के बाद विधी कर सकते है।
- यह सभी विधी धार्मीक है और शास्त्र के अनुसार परंपरागत है। इसमे कोई भी जादू अथवा तांत्रिक प्रयोग नही। आपकी श्रद्धानुसार भगवान का स्मरण करके श्रद्धा के साथ विधी करेंगे तो भगवान की कृपासे फलप्राप्ती अवश्य होगी।

* लॉज या धर्मशाला में रहनेका जो भी चार्ज होगा वह आपको खुद अलगसे देना होगा। 2 व्यक्तियोंकी भोजन व्यवस्था हम करेंगे।

Shri. Laxmikant Rameshchandra Thete

Brother: Ratish Rameshchandra Thete **Son: Mahendra Laxmikant Thete**

"Shivtirth", H. No. 297, Tirthraj Kushawart Chowk, Trimbakeshwar, Tq. Trimbakeshwar, Dist. Nashik, Pin- 422212 (Maharashtra)

रेड - सायन